अम्बाला कैंट। डिवीजनल रेल्वे मैनेजर काम्पलेक्स में कार्यक्रम के पश्चात डी.आर.एम.अनिल कुमार कठपाल, नवीन कठपाल, डी.पी.ओ.रविन्द्र कुमार, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.शैली तथा अन्य।

जरौली-कानपुर। 'क्लीन द माइण्ड एण्ड ग्रीन द अर्थ' अभियान के अवसर पर कानपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो.अशोक कुमार वृक्षारोपण करते हुए। साथ हैं ब्र.कु.दुलारी व ब्र.कु.गुप्ता।

चांदपुर। सी.ओ. राकेश गौतम तथा एस.एच.ओ.अब्बा जैदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.साधना।

नवाशहर-पंजाब। जिला शिक्षा अधिकारी कुलवंत सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कांता। साथ हैं करतार सिंह।

कोटा। एचपीसीएल प्लांट के जनरल मैनेजर राधेश्याम सैरावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.उर्मिला।

मुम्बई (डोंबिवली)। विठाई चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से ब्र.कु.शकु के हस्तों से गरीब छात्रों को नि:शुल्क कापियां वितरित करते हुए। साथ हैं सदानंद थरवल, मंगला सुले, विजय म्हात्रेजी।

श्रेष्ठ मनोबल वाले वीरों को ही इतिहास स्मरण करता है। वे इतिहास बदल देते हैं, वे संसार बदल देते हैं। वे भूमण्डल पर नवीन विचारधाराओं की सरिताएं प्रवाहित करके मनुष्यों के सूखे मन में पुन: हरियाली के बीजारोपण कर देते हैं। ऐसे मनुष्य राजनीति के क्षेत्र में भी हुए और धर्म के क्षेत्र में भी। युद्ध में भी ऐसे ही वीरों ने अदम्य साहस का परिचय दिया और विज्ञान के क्षेत्र में भी ऐसे श्रेष्ठ मनोबल से सुसज्जित मनुष्य ही संसार को कुछ दे सके। चाहे कोई भी क्षेत्र रहा हो, मनोबल से श्रृंगारित महापुरुषों ने सदा ही मानव समुदाय का साहस बढ़ाया और उनकी प्रेरणा के स्रोत बने।

आप भी यदि कुछ करना चाहते हैं, यदि संसार को कुछ देना चाहते हैं तो श्रेष्ठ मनोबल संग्रह कर आगे बढ़ो और चाहे कुछ भी हो जाए, कभी भी पीछे न हटने की प्रतिज्ञा कर लो। यदि आप ऐसा न कर पाए तो आपको भी समाज की उन्हीं घिसी-पिटी राहों पर चलना पड़ेगा जो लोगों ने बना दी हैं। परंतु समय बदल चुका, सभ्यताओं का नवीनीकरण हो चुका, युग भी बदलने वाला है, अत: आप भी बदलो।

चाहे आप विद्यार्थी हैं या कोई व्यवसायी, मनोबल आपकी अमूल्य निधि है। किसी-किसी में यह मनोबल बचपन से ही संस्कारवश पाया जाता है तो किसी अन्य को इसे प्राप्त करना होता है। आपने कई विद्यार्थी देखे होंगे, जो कभी भी घबराते नहीं, परीक्षा उनके लिए आनंद होती है। यदि आप गरीब हैं, पढ़ने के लिए धनाभाव है, माँ-बाप आपको इसीलिए पढ़ाना भी नहीं चाहते तो भी मनोबल से, विवेक बल से काम लो। अपना रास्ता स्वयं ढूँढ लो। परिस्थितियों से हारकर उच्च लक्ष्य को छोड़ देना कायरता होगी और अंत में पछताना ही पड़ेगा। हां, आपको दिन-रात मेहनत करनी पड़ेगी। परंतु मेहनत के साथ यह सोच-सोचकर स्वयं को परेशान न करो कि मेरे पास यदि धन होता तो... यदि आपके पास धन होता तो मनोबल न होता। आपको क्या चाहिए- केवल धन या मनोबल। यदि आपके पास धन होता जो जीवन-यात्रा का अनुभव भी तो न होता। धन हो और मनोबल न हो तो धन का सुख अधूरा रहेगा, ऊँचे विचारों का कोई अनुभव न होगा।

यदि आप पढ़ाई में कमज़ोर हैं और सभी आपकी असफलता को निश्चित मानते हैं तो भी आप मनोबल को बढ़ाएं और सभी को इसका प्रमाण दें-''मैं कमज़ोर नहीं हूं।'' यह अनादि अटल सत्य मानकर कमज़ोर न बनो। सच मानो तुम कमज़ोर नहीं हो। तुम मनुष्य हो और मनुष्य के पास विवेक है, बस उसे बढ़ाओ, उसे बढ़ाओ पुन:-पुन: के अभ्यास से... कवि ने ठीक ही तो कहा...

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान,
रसरी आवत-जात है, शिल पर होत निशान।

रस्सी पत्थर में गहरा गड्ढा कर देती है तो भला अभ्यास से कम बुद्धि वाला मनुष्य क्या बुद्धिमान नहीं बन सकता? अवश्य बन सकता है। कालीदास का उदाहरण क्या इसका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। ऐसे ही अन्य कई उदाहरण आपने अपने ही पास देखे होंगे।

''हार न मानो बल्कि हराओ।'' तुम शक्तिशाली हो-यह भूल न जाओ। तुम जो चाहो कर सकते हो-इस सत्य की विस्मृति न होने दो, आने वाले विघ्नों को, जीवन के तूफानों को, मार्ग के संकटों को तुम्हें हराना है। तुम बहादुर बनो, वे तुम्हें हराने आएं और हार खाकर जाएं। बस, इतना ही मनोबल यदि तुमने जमा कर लिया तो तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा।

आपने देखा होगा-कई लोग सीधा-सीधा जीने में सुख का अनुभव नहीं करते। उन्हें मार्ग में कांटे ही सुख देते हैं। वे ऊँचे-ऊँचे पत्थरों से अपने मनोबल को लड़ाना चाहते हैं। ऐसे मनुष्यों का सुख इस संसार में दिखाई देने वाले सुख से कहीं महान होता है। ये भौतिक सुख उनके कदमों को रोक नहीं पाते। वे सदा ही विघ्नों व परिस्थितियों का आह्वान करते रहते हैं और नदी की तेज धारा के विपरीत तैरने में ही उन्हें आनंद मिलता है। वे कुछ नया सीखना चाहते हैं, वे कुछ नया करना चाहते हैं। कितने ही लोगों ने नावों में बैठकर अकल्पनीय तूफानों से ग्रस्त बड़े-बड़े सागरों को पार करके अपने असीम साहस व मनोबल का परिचय दिया। यद्यपि इनसे उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं हुआ, परंतु वे अपने मनोबल को बढ़ाना चाहते थे। कई विद्यार्थी बड़ी-बड़ी स्पर्धाओं में इस भय से नहीं बैठते कि वे सफल नहीं होंगे। फलस्वरूप वे पढ़-लिखकर भी छोटी-छोटी नौकरियों में ही जीवन निकाल देते हैं। और कई लोग बार-बार फेल होकर भी मन से हार नहीं मानते और एक दिन सफल होकर वह कुछ कर दिखाते हैं, जिसकी समाज को कल्पना भी नहीं होती।

मनोबल

यदि सभी आपकी असफलता को निश्चित मानते हैं तो भी आप मनोबल को बढ़ाएं और सभी को इसका प्रमाण दें-''मैं कमज़ोर नहीं हूं।'' मैं सशक्त आत्मा हूँ, इस अनादि अटल सत्य का अनुभव करो।

यदि आप व्यापारी हैं, तो भी आप व्यापार में उतार-चढ़ाव के आगे निराश न हों। ''सफलता हमारी ही होगी'' यही आपका नारा हो। मनोबल क्षीण न होने पाए, क्योंकि मनोबल गिरते ही कदम रुक जाते हैं और मनुष्य आगे कुछ भी प्रयास करना नहीं चाहता। घाटा होने पर पुन: राह निकालो। यदि दिवाला भी हो जाए तो भी घबराओ नहीं, शेर की तरह जीना सीखो। पुन: दृढ़ संकल्प से कार्य में जुट जाओ। अनेक लोग तुम्हारे सहयोगी हो जाएंगे और तुम्हारे श्रेष्ठ भाग्य का सितारा एक बार पुन: विश्व-गगन में चमक उठेगा।

यदि आप वैज्ञानिक हैं या इंजीनियर हैं, आप कुछ नया निर्माण करना चाहते हैं, परंतु लोग आपको साथ नहीं देते, परिस्थिति आपको कुछ करने नहीं देती, आपके पास आवश्यक साधन नहीं है या लोग आपकी हंसी भी उड़ाते हैं तो भी दृढ़ता से काम लो। हार न मानो। मेहनत करते रहो, अपना मार्ग न छोड़ दो। अवश्य ही आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। वैसे तो सभी जानते हैं कि अच्छे काम करने वालों को सहयोग कम ही मिलता है। परंतु सहयोग न मिलने पर भी आप आगे बढ़ो तो लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त होगा।

परंतु आज कई लोगों में मनोबल काफी कम देखा जाता है। ज़रा सी बीमारी आई और ये बने कमज़ोर। ज़रा-सा विघ्न आया और इन्होंने छोड़ा प्रयास...। यह कमज़ोर मनुष्यों के लक्षण हैं। किसी कार्य में अधिकारियों का सहयोग न मिला, समाज या परिवार ने विरोध किया तो लोग अच्छे-अच्छे काम से भी मुंह मोड़ लेते हैं। कई मनुष्य दूसरों द्वारा अपने कार्यों की आलोचना सुनकर भी उत्साहहीन हो जाते हैं। और कई महावीर उतना ही अधिक शक्तिशाली बन जाते हैं, जितनी लोग उनकी निन्दा करते हैं।

आप सिगरेट पीते हैं, परंतु चाहते हुए भी उसे छोड़ नहीं पाते- यह आपके कमज़ोर मन का प्रतीक है। यदि आप सिगरेट ही नहीं छोड़ पाते तो सच जानिए आप कुछ भी नहीं कर पाएंगे। आज विकारों का भोग करते-करते मनुष्य का मनोबल इतना धूमिल हो चुका है कि उसमें समाज की कुरीतियों से हटकर कुछ करने की तो साहस ही नहीं। इसलिए आध्यात्मिक साधनाओं में ब्रह्मचर्य का परम महत्त्व है। क्योंकि साधना को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए सर्वश्रेष्ठ मनोबल की आवश्यकता पड़ती है। ठीक ऐसे ही हमारा जीवन भी एक साधना ही है। इसमें भी सदा सफलता पाने के लिए सर्वोच्च मनोबल की आवश्यकता है-इसके लिए जीवन में संयमों की पालना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार यदि आप अपने मनोबल को बढ़ाना चाहते हैं तो...कोई भी काम निश्चित समय में पूर्ण करने की प्रतिज्ञा करो। कोई भी काम लो और सोचो कि यह काम मुझे एक घंटे में पूर्ण करना है और संपूर्ण लगन से जुट जाओ। कोई भी ढ़ीलापन न आने दो, आपका मनोबल बढ़ेगा।

यदि किसी भी कार्य में बार-बार आपकी हार भी हो रही है तो भी आप हार न मानकर पुन: उसमें सफल होने का प्रयास करो। बार-बार की हार, आपका अनुभव बढ़ाएगी और सफलता आपके द्वार खटखटाएगी, आपका मनोबल बढ़ाएगी। तो हार मनोबल गिराती है, परंतु इस प्रकार धैर्यचित्त प्राणी हार को मनोबल वृद्धि का साधन बना लेते हैं।

मन का बल बढ़ता है-एकाग्रता से। आप यदि सर्वशक्तिवान पर मन को एकाग्र करें तो आप संसार में सबसे अधिक श्रेष्ठ मनोबल वाले मनुष्य बन सकते हैं और यदि आप चाहें तो संपूर्ण संसार को भी बदल सकते हैं। जो भी अच्छा काम आप करना चाहते हैं, उसे अवश्य ही करें। परिवार या समाज की दीवारों को लांघकर कर्मक्षेत्र पर उतर जाएं। पीछे समस्त समाज आप पर प्रशंसा के पुष्प चढ़ाएगा। दूसरों के कहने से श्रेष्ठ कार्य को न छोड़ें। इस तरह आपका मनोबल बढ़ेगा।

''मनुष्य एक शक्ति है''-क्योंकि हम आत्माएं सर्वशक्तिवान भगवान की संतान हैं। अत: सदा यही संकल्प रहे कि मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ, मेरे शब्दकोष में असंभव शब्द नहीं है। इस प्रकार के विचार आपके मनोबल को बढ़ाएंगे।

इसी प्रकार आपको यह भी ध्यान रहे कि कौन-सी चीज़ें मनुष्य के मनोबल को क्षीण करती हैं। अधिक बोलना, साथियों से मोह, काम-विकार और क्रोध, चिन्ताएं व ज्यादा सोचने की आदत-ये मनोबल के शत्रु हैं। अत: जिसे मनोबल बढ़ाना है, वे इन कुव्यसनों व विकारों से स्वयं को मुक्त रखकर निर्भयतापूर्वक अपने मार्ग का अनुसरण करें। तो एक दिन अवश्य ही विजयश्री आपके गले का हार बनेगी और जीवन में आने वाली छोटी-मोटी घटनाएं आपके आनंद को नष्ट नहीं करेंगी।

देवतालाब (रीवा)। प्रसिद्ध कथा वाचक महाराज बालमुकुंद जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु.लता।